



ऋग्वेद मण्डल-4

ऋग्वेद मन्त्र 4.2.16

Rigveda 4.2.16

अधा यथा नः पितरः परासः प्रत्नासो अग्न ऋतमाशुषाणाः ।
शुचीदयन्दीधितिमुक्थशासः क्षामा भिन्दन्तो अरुणीरप व्रन् ॥

(अधा) इस प्रकार (यथा) जैसे कि (नः) हमारे (पितरः) पूर्वज, दिव्य विद्वान्, परमात्मा (परासः) सर्वोत्तम (प्रत्नासः) प्राचीन (आयु में, ज्ञान में, कार्यों में) (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान्, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य (ऋतम्) सम्पूर्ण सत्य (आशुषाणाः) अच्छी तरह से प्राप्त, अनुभूति (शुची) शुद्धता (इत् अयन्) किरणें (दीधितिम्) ज्ञान का प्रकाश (उक्थ शासः) योग्य ज्ञान को प्रदान करना (क्षामा) सांसारिक, भौतिक, अन्धकार का आवरण (भिन्दन्तः) तोड़ते हुए (अरुणीः) सूर्योदय का प्रकाश (अप व्रन्) खुला हुआ, बिना ढका हुआ ।

नोट :- यह मन्त्र यजुर्वेद 19.69 में समान रूप से है ।

व्याख्या :-

हमारे पूर्वज चेतना में कितने उच्च थे?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान्, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य! कृपया हमारे पूर्वजों, सर्वोत्तम और प्राचीन (आयु में, ज्ञान में और कार्यों में) जो सम्पूर्ण सत्य, शुद्धता को प्राप्त करने के लिए तथा उसकी अनुभूति के लिए समर्पित थे और जिन्होंने योग्य ज्ञान के प्रकाश की किरणों का प्रसार किया और जिन्होंने सांसारिक, भौतिक और अन्धकार के आवरण को तोड़ा और जिन्होंने सूर्योदय के प्रकाश को खोला अर्थात् आवरण रहित किया, उनकी तरह हमें शुद्ध करो और ज्ञानवान् बनाओ ।

जीवन में सार्थकता :-

हम अपने पूर्वजों की तुलना परमात्मा से क्यों करते हैं?

हम अपने पूर्वजों की तुलना परमात्मा से इसलिये करते हैं क्योंकि वे कार्यों में और मन में शुद्ध हैं । उन्होंने उच्च चेतना का जीवन बिताया । उन्होंने परमात्मा की सर्वोच्च वास्तविकता को जाना और उसकी अनुभूति की ।

इसके अतिरिक्त वे निश्चित रूप से आध्यात्मिक बल की एक दिव्य श्रृंखला हैं जो सृष्टि उत्पत्ति के समय से परमात्मा से प्रकट हुई थी ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



R. V. 4.7.1

ऋग्वेद मन्त्र 4.7.1

Rigveda 4.7.1

अयमिह प्रथमो धायि धातृभिर्होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यः ।
यमज्जवानो भृगवो विरुरुचुर्वनेषु चित्रं विभ्वं विशेषे ॥

(अयम्) यह (परमात्मा, अग्नि, सर्वोच्च ऊर्जा) (इह) यहाँ (संसार में, हृदय में) (प्रथमः) सर्वोत्तम, सर्वोच्च (धायि) धारण किया (धातृभिः) धारण करने योग्य के साथ (दूसरों का पालन-पोषण करने के लिए) (होता) लाने वाला और देने वाला (कल्याणकारी यज्ञों के लिए पदार्थ) (यजिष्ठः) संगति के योग्य (अध्वरेषु) अहिंसक यज्ञ (ईड्यः) खोज और अनुभूति के योग्य (यम) जिसे (अज्जवानः) गहरे ज्ञान के विशेषज्ञ (भृगवः) तस्याओं और कल्याणकारी यज्ञों को करने वाले (विरुरुचः) स्वयं को ज्ञान से प्रकाशित करना (वनेषु) विभाग करने वालों के लिए, बांटने वालों के लिए (अन्य लोगों के बीच सम्पदा) (चित्रम्) अद्भुत, विशेष (विभ्वम्) विशेष रूप से प्रसिद्ध, जाना गया (विशे विशे) सभी स्थानों पर ।

नोट :- यह मन्त्र यजुर्वेद 3.15 में समान रूप से आया है ।

व्याख्या :-

परमात्मा, अग्नि और ऊर्जा को धारण करने में सक्षम कौन है?

हमें परमात्मा, अग्नि और ऊर्जा के बारे में गहरा ज्ञान क्यों प्राप्त करना चाहिए?

यह (परमात्मा, अग्नि और ऊर्जा) यहाँ पर सर्वोत्तम है (इस ब्रह्माण्ड में, हमारे हृदय में) और यह उन सभी के द्वारा धारण करने के योग्य है जो धारण करने में सक्षम हैं (अन्य लोगों का पालन-पोषण करने में) । वह अहिंसक कल्याणकारी यज्ञों के लिए सभी पदार्थों को लाने वाला और देने वाला है; वह संगतिकरण के योग्य है; वह खोज और अनुभूति के योग्य है, जिसके साथ गहरे ज्ञान के विशेषज्ञ, तपस्याओं और कल्याणकारी यज्ञों को करने वाले अपने-अपने जीवन में दिव्य ज्ञान से स्वयं को प्रकाशित करते हैं । ऐसे लोग सब लोगों में एक बलशाली चरित्र की तरह प्रसिद्ध होते हैं जो अपनी सम्पदा दूसरों में बांटते हैं ।

जीवन में सार्थकता :-

दिव्य ऊर्जा क्या है?

राक्षसी ऊर्जा क्या है?

जो व्यक्ति अन्य लोगों की समस्याओं को धारण करने के योग्य है, दूसरों को सहायता और समर्थन देता है, अपने व्यक्तिगत अहंकार और इच्छाओं को त्याग देता है, केवल वही परमात्मा, अग्नि और ऊर्जा को धारण करता है । यह दिव्य ऊर्जा ऐसे लोगों के जीवन में एक बलशाली आधार बन जाती है ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



ऐसे लोगों के द्वारा जब दूसरों के लिए ऊर्जा का उपयोग किया जाता है तो वह दिव्य कहलाती है, सकारात्मक दिखाई देती है और सदैव बढ़ती रहती है। जबकि अपने स्वार्थी हितों के लिए प्रयोग की गई ऊर्जा राक्षसी कहलाती है, नकारात्मक लगती है और धीरे-धीरे घटती जाती है।

यह मन्त्र वैज्ञानिकों को भी प्रेरित करता है कि वे इस सृष्टि में विद्यमान प्रत्येक पदार्थ के अन्दर ऊर्जा की खोज और आविष्कार करें जिससे सकारात्मक रूप से उसका भरपूर उपयोग हो सके अर्थात् कल्याण के लिए, किसी विनाश के लिए नहीं या स्वार्थी हितों के लिए भी नहीं।

सूक्ति :-

(अयम् इह प्रथमः धायि धातृभि । ऋग्वेद 4.7.1, यजुर्वेद 3.15)

यह (परमात्मा, अग्नि और ऊर्जा) यहाँ पर सर्वोत्तम है (इस ब्रह्माण्ड में, हमारे हृदय में) और यह उन सभी के द्वारा धारण करने के योग्य है जो धारण करने में सक्षम हैं (अन्य लोगों का पालन-पोषण करने में)।

R. V. 4.9.1

ऋग्वेद मन्त्र 4.9.1

Rigveda 4.9.1

अग्ने मृळ महौ असि य ईमा देवयुं जनम्।

इयेथ बहिरासदम्॥

(अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान्, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य (मृळ) दयालु और उदार बनो (महान्) महान् (असि) आप हो (य) जो (ईमा) इस प्रकार (देवयुम् जनम्) दिव्य समर्पण की इच्छा करने वाला (इयेथ) आओ (बहिः) गहरे हृदय स्थान में (आसदम्) स्थापित होने के लिए।

नोट :- यह मन्त्र थोड़े से परिवर्तन के साथ सामवेद 23 में आया है। इस मन्त्र के 'असि य ईमा' के स्थान पर सामवेद 23 में 'अस्य य आ' आया है।

व्याख्या :-

परमात्मा को गहरे हृदय स्थान में स्थापित करने की प्रार्थना कौन कर सकता है?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान्, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य! आप महान् हो, कृपया अपने श्रद्धालु भक्तों को सौभाग्य प्रदान करते हुए दयालु और उदार बनो जो आपके प्रति दिव्य समर्पण की इच्छा रखते हैं, इस प्रकार, आप उनके गहरे हृदय स्थान में आकर स्थापित हो जाओ अर्थात् मार्ग दर्शन दो और शासन करो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जीवन में सार्थकता :-

दिव्य संगति की इच्छा कैसे करें?

जो लोग परमात्मा के प्रति दिव्य समर्पण की इच्छा रखते हैं, सभी भौतिक इच्छाओं को त्यागकर, परमात्मा, सर्वोच्च ऊर्जा, निश्चित रूप से ऐसे श्रद्धालु भक्तों के लिए अपनी दया और उदारता दिखाते हैं। परमात्मा ऐसे श्रद्धालु भक्तों के पास आकर उनमें अपनी शक्तियाँ स्थापित करते हैं। यदि कोई व्यक्ति दिव्य संगति की इच्छा करता है तो उसे अपनी सारी अन्य इच्छाएँ त्याग देनी चाहिए, क्योंकि यदि भौतिक इच्छाएँ विद्यमान होती हैं तो परमात्मा, दयालु और उदार होने के कारण, निश्चित रूप से उन इच्छाओं की पूर्ति करते हैं। उस अवस्था में दिव्य संगति की इच्छा दूर ही रहेगी।

सूक्ति :-

(देवयुम् जनम् इयेथ बर्हिः आसदम्। ऋग्वेद 4.9.1, सामवेद 23)

जो आपके प्रति दिव्य समर्पण की इच्छा रखते हैं, इस प्रकार, आप उनके गहरे हृदय स्थान में आकर स्थापित हो जाओ अर्थात् मार्ग दर्शन दो और शासन करो।

R. V. 4.15.3

ऋग्वेद मन्त्र 4.15.3

Rigveda 4.15.3

परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्।

दधद्रत्नानि दाशुषे।।

(परि – अक्रमीत् से पूर्व लगाकर) (वाजपतिः) खाद्य अनाजों का देने वाला और संरक्षण करने वाला (कवि) दृष्टा, दिव्य बुद्धि (अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य (हव्यानि) उपहार और आहुतियों को समझने वाला (अक्रमीत् – परि अक्रमीत्) सभी दिशाओं में व्याप्त (दधत्) देते हुए

(रत्नानि) बहुमूल्य पदार्थ (ज्ञान, विवेक और गौरवशाली सम्पदा के रूप में) (दाशुषे) उदार दाताओं के लिए।

व्याख्या :-

परमात्मा आहुतियों को क्यों समझते हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य एक कवि रूप दृष्टा है और दिव्य बुद्धि हैं। वह खाद्य अनाजों के दाता और संरक्षक हैं, अतः उपहार, आहुतियों आदि को समझते हैं। वह

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



एक उदार दाता के लिए बहुमूल्य पदार्थों को (ज्ञान, विवेक और गौरवशाली सम्पदा के रूप में) देते हुए सभी दिशाओं में व्याप्त हैं।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा मनुष्यों को हर प्रकार की सम्पदाएँ क्यों देते हैं?

सृष्टि के पालन-पोषण के चक्र को सर्वोच्च निर्माता परमात्मा अत्यन्त सुन्दर तरीके से प्रबन्ध करते हैं। क्योंकि उनके पास कवि समान दर्शन शक्ति अर्थात् दिव्य बुद्धि है। उन्होंने इस सृष्टि में सबकुछ सभी जीवों के पालन-पोषण के लिए एक भोजन चक्र के रूप में उत्पन्न किया है। केवल मनुष्यों के साथ ही अपनी सर्वोच्च बुद्धि की सहभागिता करते हुए वे निश्चित रूप से यह आशा करते हैं कि उस सहभागिता के चक्र से हमें जो भी भाग प्राप्त होता है। उसे हम दूसरे के कल्याण के लिए उदारता पूर्वक प्रदान करें। इसलिए वे मनुष्यों को उदार दाता बनने के लिए हर प्रकार की सम्पदाएँ देते हैं।

सूक्ति :-

(परि अक्रमीत् दधत् रत्नानि दाशुषे। ऋग्वेद 4.15.3)

वह एक उदार दाता के लिए बहुमूल्य पदार्थों को (ज्ञान, विवेक और गौरवशाली सम्पदा के रूप में) देते हुए सभी दिशाओं में व्याप्त हैं।

R. V. 4.48.1

ऋग्वेद मन्त्र 4.48.1

Rigveda 4.48.1

विहि होत्रा अवीता विपो न रायो अर्यः।

वायवा चन्द्रेण रथेन याहि सुतस्य पीतये।।

(विहि) व्यापक, भोग करने के लिए (होत्रा) आहुतियों को स्वीकार करते हुए (अवीताः) भोग न की गई, नष्ट न होने वाली (विपः) बुद्धिमान (परमात्मा, व्यक्ति) (न) जैसे कि (रायः) सम्पदा (अर्यः) व्यापारी, एक महान्, श्रेष्ठ श्रद्धालु (वायो) वायु, प्राण ऊर्जा (आ – याहि से पूर्व लगाकर) (चन्द्रेण) स्वर्णिम, शांतिदाता (रथेन) रथ के द्वारा, शरीर के द्वारा (याहि – आ याहि) सभी दिशाओं से आओ, प्राप्त होओ (सुतस्य) उत्पन्न हुए का (सम्पदा अर्थात् भौतिक सम्पन्नता, ज्ञान, शुभ गुण, श्रद्धा भक्ति) (पीतये) संरक्षण के लिए।

व्याख्या :-

हमारी सम्पदाओं की रक्षा कौन करता है?

सम्पदाओं के भिन्न-भिन्न रूप क्या हैं?

जिनका भोग नहीं किया गया और जो नष्ट नहीं होने वाली उन आहुतियों को स्वीकार करते हुए वह बुद्धिमान (परमात्मा, व्यक्ति) भोग करने के लिए व्याप्त होते हैं। जैसे एक व्यापारी या एक महान् श्रेष्ठ श्रद्धालु भक्त अपनी सम्पदाओं जैसे भौतिक सम्पन्नताएँ, शुभगुण, श्रद्धा, भक्ति आदि को संरक्षित करता है।

हे वायु, हमारी प्राणिक ऊर्जा! कृपया सभी दिशाओं से आओ और उत्पन्न सम्पदा जैसे भौतिक सम्पन्नताएं, शुभगुण, श्रद्धा, भक्ति आदि की रक्षा के लिए हमें प्राप्त होओ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जीवन में सार्थकता :-

नष्ट न होने वाली या स्थाई सम्पदा कौन सी है?

हमारी वास्तविक आहुतियाँ व्यापक होकर परमात्मा के साथ किस प्रकार जुड़ जाती हैं?

एक व्यापारी अपने अर्जित धन को अपने सुखों और भविष्य के निवेश के लिए सुरक्षित करता है।

एक राजा से अपेक्षा होती है कि वह अपने देश में कमाये गये शुभ गुणों, परम्पराओं, संस्कृति, ज्ञान और प्रत्येक श्रेष्ठ सम्पदा को लोगों के वर्तमान और भविष्य के लिए रक्षा करे। माता-पिता अपनी सन्ताओं की रक्षा उनके महान् भविष्य के लिए करते हैं।

इसी प्रकार एक श्रद्धालु भक्त वायु का आह्वान करके अपनी भक्ति और भक्ति के पथ की रक्षा के लिए परमात्मा से प्रार्थना करता है जिससे वह परमात्मा के साथ अपनी संगति की अनुभूति कर सके।

यह मन्त्र नष्ट न होने वाली सम्पदा पर केन्द्रित है। केवल भक्ति ही नष्ट न होने वाली सम्पदा है जो आत्मा के साथ मुक्ति तक जाती है और उसके बाद भी उसके साथ रहती है। निःसंदेह, भक्ति के साथ भक्ति का पथ अर्थात् तपस्यापूर्ण जीवन और भक्ति के साथ जुड़ी बुद्धि भी नष्ट न होने वाली सम्पदा है। परमात्मा निश्चित रूप से प्राणिक ऊर्जा के माध्यम से इस भक्ति का पूर्ण और स्थाई संरक्षण करते हैं। हमारी सच्ची आहुतियाँ अहंकाररहित और इच्छारहित त्याग हैं जो हम दूसरों के लिए करते हैं। ऐसी आहुतियाँ हमारी प्राणिक ऊर्जा के द्वारा ले जाई जाती हैं जिससे वे व्याप्त होकर परमात्मा के साथ जुड़ सकें।

सूक्ति :-

(वायो चन्द्रेण आ याहि सुतस्य पीतये। ऋग्वेद 4.48.1)

हे वायु, हमारी प्राणिक ऊर्जा! कृपया सभी दिशाओं से आओ और उत्पन्न सम्पदा जैसे भौतिक सम्पन्नताएं, शुभगुण, श्रद्धा, भक्ति आदि की रक्षा के लिए हमें प्राप्त होओ।

This file is incomplete/under construction

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171